सोशियल मीड़िया खतरा है क्या?

मानव का इतिहास ~~अ~~ दिलचस्प एवं चकित करनेवाली एक वस्तु है। पहले इंसान अंधकार के दुनिया में एक जानवर की तरह रहता था, लेकिन जैसे ही ~~आम~~ इंसान एक जगह से दूसरी जगह जाना खत्म किया और खुद ~~खेती~~ किसान बनगया तबसे मानव के जीवन में विज्ञान का समाना शुरू होगया। उस विज्ञान के अगनि जो हमारे पूर्वज ने जलाये थे उस अगनि अब भी 'अधुनिक विज्ञान' के रूप में हमारे सामने है। उसी आधुनिक विज्ञान के एक 'नई खोज' है 'सोशियल मीड़िया'।

सोशियल मीड़िया ने इस 'दुनिया के नक्शे को पूरी तरह से बदल दिया' यही सच्चाई है। लेकिन ~~पुराने~~ आज के लोगों का कहना है कि सोशियल मीड़िया ने हमारे संस्कृति और इंसानियत को बर्बाद किया है, तो चलिए हम देखते हैं कि क्या सच्च है और क्या गलत।

सोशियल मीड़िया : क्या है?

बहुत ही कम शब्दों में हम सोशियल मीड़िया को 'संचार माध्यम' के नाम से पुकार सकते हैं।

~~संचार माध्यम : वह होता है~~ जो माध्यम जैसे अखबार, न्यूज़ चैनल, रेडियो यह सबका एक मिश्रण है सोशियल मीड़िया। फेसबुक, इनस्टाग्राम, यूट्यूब और ट्विटर आजके प्रमुख सोशियल मीड़ियायें हैं। सोशियल मीड़िया ~~अंदर जाल~~ इनटरनेट का एक भाग है जिससे हमें विज्ञान, मनोरंजन और नए खबर मिलते है। युवावों को आजके सोशियल मीड़िया ~~स्व~~ स्वाधीन करते हैं।

सोशियल मीड़िया : खूबियाँ

~~आज्ञा~~ इस दशक के सबसे महान बोजों में से एक है सोशियल मीड़िया। ज्ञान प्राप्त करने केलिए और खबरें जानने केलिए सोशियल मीड़िया से ~~कोई~~ अच्छा कोई रास्ता आज मौजूद नहीं है। सोशियल मीड़िया के आने से देशों में और नागरिकों में जो दूरी थी वह खत्म होगया है और यह पूरी दुनिया एक देश में बदल गया है यह सबकेलिए हमें इसका धन्यवाद करना होगा।

"मैं आज एक वस्तु से इस दुनिया का परिचय करना चाहता हूँ, यह एक नेसी वस्तु है जो इस दुनिया को साठ साल ~~आगे~~ आगे लेजाएगा"

फेसबुक को दुनिया से परिचय करते वक्त उसकी सी.ई.ओ 'मार्क सुक्करबर्ग' ने वाक्य कहा था और सिर्फ- दस-ग्यारह सालों उन्होंने इसे सच में बदल दिया। यही है सोशियल मीड़िया की खूबी इसने हर नागरिक- को एक 'न्यूज़ चैनेल' में बदल दिया, और बुराई के - खिलाफ जंग करने केलिए सबको प्राप्त करदिया और- सोशियल मीड़िया में जो मौका और हकता मिलत है- हमें वह भी एक खूबी है।

यु-एन के एक और बी.बी.सि ने मिलकर- २० दोहजार उन्नीस (2019) में एक रिपोर्ट निकाला था - और उसमें कहा गया है कि "सोशियल मीड़िया के - कारण खबरें फैलने का तेज़ी से गुना तक ● हुआ- है, और यह तूफान, और जैसे मुश्किल के खतरे - के वक्त में बहुत ज़्यादा काम आता है।

● 2018 में और 2019 में केरल में जो- तूफान और भाड़ आया था; उसमें लोगों की जान- बचाने केलिए यह बहुत काम आया था। इसलिए- सोशियल मीड़िया को 'खतरा' बोलने से पहले हमें - यह सब बात याद में लाना होगा।

सोशियल मीड़िया: खतराँ

तो क्या सोशियल मीड़िया खतरे से मुक्त है? इसका जवाब नहीं न है। क्योंकि आज दूसरे माध्यमों के तरह यह भी बदनाम होरहा है। पिछले साल जो 'केंब्रिडज अनलेटिका' का किस्सा सामने आया था वह बात सोशियल मीड़िया के 'आज़ादी और मुक्ता' तस्वीर को बर्बाद किया था। और भी ऐसे किस्से आज सामने आरहे हैं।

आजकल लोग सोशियल मीड़िया के मदद से नफ़रत और झूठ फैलाना शुरू किया है और इसका फल बहुत ही बुरा हुआ है। 'प्र.वि.प्रकाश' द्वारा किया गया सर्वे के अनुसार गलत खबर सुनकर आपस में मारा-मारी करके सौ से अधिक लोग पिछले साल अपने जीवन नष्ट करदिया।

सोशियल मीड़िया का स्थान आजके समाज में बहुत बड़ा है और कुछ लोग इसका इस्तमाल नारियों की मज़ाक बनाने केलिए और उनको बुरा दिखाने केलिए कररहा है। सोशियल मीड़िया आतंकवाद, नशा और पोर्नोग्राफि जैसे वस्तुओं केलिए

भी जाना जाता है। वह ही चीज़ जो देश का नुकसान-कररहा है वह सब का स्थान भी है, यह सोशियल मीड़िया। जो लोग सोशियल मीड़िया को 'खतरा' बुलाते हैं - उन्हें हम पूरी तरह से गलत नहीं कहसकते पर - इस सबका सच्चाई कुछ और ही है।

सोशियल मीड़िया का ज़रूरत

तो इस सबके बाद भी क्यों सोशियल-मीड़िया क्यों यहाँ पर है? इसका जवाब है कि हर-वस्तु को एक अच्छा और बुरा चहरा होगा उसी-तरह का वस्तु है सोशियल मीड़िया भी।

दुनिया में विकास लाने में बुराई को सामने-लाने में और विज्ञान को ऊँचा करने में सोशियल-मीड़िया ने जो भूमिका निबाई वह तारीफन है;-इसलिए ही सोशियल मीड़िया आज भी है।

सोशियल मीड़िया वरदान है या खतरा?

इस सवाल का जवाब है कि - सोशियल मीड़िया एक वरदान है जो इंसान को-मिला है। लेकिन इसे हमें 'खतरा' क्यों बुलाते हैं?

है? इसका कारण हम खुद ही है, क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि इस सबका सही इस्तमाल क्या है, ~~और इसे कैसे~~ यही है पहला कारण कि यहाँ – हम ही इसको खतरा बनाया है। 'बहासा' भाषा – में एक कहावत है

"टिडाक नोणडन मनुस्या
इकु टाक्के रोहलू, टालू।"

इसका मतलब है कि "जिस चाकू से – मनुष्य का खून किया जाता है उसीसे हम सबज़ी के – टुकड़े करते हैं" जैसे एक चाकु हम ~~किस~~ सबज़ी टुकड़े- करने केलिए लेते हैं, उसी ~~तरह~~ हम से इंसान किसीको- मारता भी है, लेकिन हम चाकू को दोषि नहीं मानना – इंसान को दोषि मानता है। इसी तरह सोशियल मीडिया भी 'खतरा' नहीं है इसका खलत उपयोग ~~करने~~- करनेवाले हम इंसान असलि समस्या और खतरा है।

~~जैसे~~ प्लास्टिक और डैयनामेट, ऐसे जो वस्तु- है जिसका खोज का लक्ष्या इंसानिय की अच्छाई थी, लेकिन हम इंसानों ने प्लास्टिक को सबसे- बड़ा तकलीफ बनादिया और डैयनामेट को लोगों को मारने

की ~~अज्ञान~~ एक रास्ता उसी इंसान विज्ञान और सोशियल मीड़िया को दोषी कहरहा है!

तो यह सबका हल क्या है?, यहाँ 'जवाब और सवाल' हम खुद है। हमें सोशियल मीड़िया को साफ और कोमल बनाना है तो हमें पहले खुद को बदलना होगा, हमें ~~यह सोच~~ हर खबर 'फोरवड' करने से पहले सौ बार सोचना होगा और सोशियल मीड़िया नफरत और झूठ फैलाने का जगह नहीं यह हमें पहचानना होगा।

चलिए एक कहानि के साथ खत्म करता हूँ। "एक घर में पाँच साल एक बच्चा रहता था और वह बड़ा शरारति था, एकदिन उसने अपने पिताजि के कमरे में गया और वहाँ एक नक्शा था उसे चार-पाँच टुकड़ा करकर वहाँ से वह चला गया। लेकिन थोडी देर बाद जब पिताजी आकर यह सब देखा तो बहुत गुस्सा हुआ और उसे कुलाकार कहा "अरे, शरारति लड़के तूने यह क्या किया? यह नक्शा तो मेरा नहीं और बहुत कीमति है जल्दि इसे ठीक करो।" इतना बोलकर वह चला गया

लेकिन उस बच्चे ने कोशिश किया, और चार-
मिनट के बाद पिताजि ने आकर देखा तो वह बच्चे ने-
उस नक्शे को ठीक किया था। यह देखकर पिताजी-
आशचर्य से पूछा "अरे, तुम तो सिर्फ पाँच साल के हो,
तो इस दुनिया के नक्शे को तुम ~~कैसे~~ वे कैसे-
ठीक किया?" बच्चे ने मुस्कुराकर कहा "मैं ने उस-
इंसान कि तस्वीर को ठीक किया और दुनिया अपने-आप-
ठीक हुआ।" तब पिताजी ने उस नक्शे के पीछे देखा-
वहाँ एक इंसान की तस्वीर था।" यह कहानि हमें
बहुत कुछ सिखाते हैं कि ~~अगर इंसान ठीक~~ इंसान-
जब ठीक होगा तबही दुनिया ठीक होगा।

सोशियल मीडिया कोई खतरा नहीं है-
बल्कि असल में ~~@~~ इसे ~~अलत~~ गलत तरीके से उपयोग-
करनेवाले हम ही असलि ~~मन~~ खतरा है। लेकिन हमें-
इसे बदलना होगा क्योंकि बहुत कुछ हम फर्क करदिया-
है, अब समय है फर्क लाने का"।

जय हिन्द।